CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को०
८०

अमीर खुसरो

[illegible]

श्री सुरेन्द्र तिवारी

प्रकाशन शाखा
सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने सन् १९५६ में जौनपुर में विकास प्रदर्शनी के अवसर पर सूचना विभाग के प्रकाशनों को देख कर संतोष प्रकट किया था। उसी सिलसिले में उन्होंने अमीर खुसरो के सम्बन्ध में भी एक प्रकाशन की इच्छा प्रकट की थी। इस पुस्तिका के द्वारा हम प्रधान मंत्री की उसी इच्छा की पूर्ति का प्रयास कर रहे हैं।

मूल्य २५ नये पैसे

मुद्रकः
अधीक्षक मुद्रण एवं लेखन सामग्री
लखनऊ उत्तर प्रदेश (भारत)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बच्चो ! अमीर खुसरो की पहेलियां तुमने अवश्य ही पढ़ी होंगी। कितनी मज़ेदार पहेलियां है। तभी तो आज सात सौ वर्ष बाद भी हम लोंगों की जबान पर खुसरो का नाम उसी तरह चला आ रहा है जैसा खुसरो के समय में था। खुसरो का जन्म सन् १२५५ ई० में एटा के पटियाली नामक एक गांव में हुआ था। इनके पिता अमीर सैफुद्दीन सुल्तान इल्तुतमिश के दरबार के सरदार थे। खुसरो का नाम अबुल हसन था, पर इनका उपनाम अमीर खुसरो इतना प्रसिद्ध हुआ कि अबुल-हसन नाम से इनको जानने वाले बहुत कम लोग रह गये। चार वर्ष की अवस्था में बालक खुसरो दिल्ली चले आये और आठ वर्ष की अवस्था तक अपने पिता और भाइयों से शिक्षा प्राप्त करते रहे। सन् १२६४ में इनके पिता किसी लड़ाई में मारे गये और उसके बाद बालक खुसरो को इनके नाना श्री एमादुलमुल्क ने पढ़ाया-लिखाया। इनके नाना ११३ वर्ष के थे और बड़े विद्वान थे। उन्होंने खुसरो को कई भाषाओं से परिचित कराया और १२ वर्ष की अवस्था ही में खुसरो कविताएं लिखने लगे। विद्वान लोग उन कविताओं को देखते, फिर खुसरो को। वे आश्चर्य करते थे कि १२ वर्ष की आयु का बालक इतनी सुन्दर कविताएं कैसे लिख लेता है। इनके गुरु निजामुद्दीन औलिया थे जो इनके परिश्रम और इनकी प्रतिभा को देखकर इन्हें 'तुर्के अल्लाह' के नाम से पुकारते थे।

खुसरो ने अपने जीवन की सर्वप्रथम नौकरी प्रसिद्ध सुल्तान गयासुद्दीन बलवन के पुत्र मुहम्मद सुल्तान के यहां की। मुहम्मद सुल्तान उस समय मुल्तान का सूबेदार था। मुहम्मद सुल्तान बड़ा ही काव्यप्रेमी था। उसने एक काव्य संकलन किया था जिसमें लगभग बीस हजार शेर थे। मुहम्मद सुल्तान के यहां खुसरो पांच वर्ष तक रहे। सन् १२८४ में मुगलों ने पंजाब पर आक्रमण किया। मुहम्मद सुल्तान ने उन्हें ठेल कर बाहर तो कर दिया पर वह स्वंय युद्ध में मारा गया और खुसरो को मुगलों ने कैद कर लिया। दो वर्ष बाद इन्हें उस कारागार से मुक्ति मिली और ये अपने घर पटियाली चले आये। कुछ दिनों के बाद ये बलबन के दरबार में गये और वहां इन्होंने वे शेर पढ़े जो इन्होंने बलबन के पुत्र

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुहम्मद सुल्तान की मृत्यु पर लिखे थे। कहते हैं कि बलबन उन्हें सुनकर बहुत रोया। इस रोने से उसे बुखार हो आया और वह मर गया। बलबन की मृत्यु के बाद खुसरो अमीर अली मीर जामदार के साथ रहने लगे। सन् १२८८ में ये पुनः दिल्ली में कैकुबाद के दरबार में वापस आ गये। कैकुबाद के मारे जाने पर गुलाम वंश का अन्त हो गया और जलालुद्दीन खिलजी दिल्ली का शासक हो गया। उसने खुसरो का बड़ा स्वागत किया और इनका वेतन १२०० तनका कर दिया।

खुसरो बड़े धार्मिक और सच्चे-सीधे आदमी थे। जलालुद्दीन ने कई बार निजामुद्दीन औलिया से भेंट करने की इच्छा प्रकट की थी, पर औलिया ने उसे स्वीकार नहीं किया। एक बार जलालुद्दीन ने खुसरो से कहा कि हम तुम चुप-चाप बिना आज्ञा लिये औलिया से भेंट करेंगे तुम किसी से कुछ कहना मत। खुसरो बड़े ही असमंजस में पड़े। यदि वह कह देते तो प्राण जाने का भय था और यदि न कहते तो अपने धर्म-गुरु के प्रति ईमानदार न रहते। अंत में उन्होंने कह ही दिया और औलिया वह स्थान छोड़कर कहीं अन्यत्र चले गये।

सन् १२९६ में अलाउद्दीन अपने चाचा की हत्या करके सुल्तान हो गया और उसने इनका वेतन एक सहस्र तनका कर दिया तथा इन्हें 'खुसरुए-शारआं' की पदवी दी। अलाउद्दीन के बाद कुतुबुद्दीन मुबारक शाह सुल्तान हुआ और उसने खुसरो के क़सीदे पर प्रसन्न होकर हाथी के बराबर तौल का सोना तथा रत्न प्रदान किये। अंतिम दरबार जिसमें खुसरो रहे वह गयासुद्दीन तुग़लक का था। खुसरो ने इस पर अपनी एक पुस्तक तुग़लकनामा लिखी है। इसी के साथ ये बंगाल चले गये और लखनौती में ठहर गये। सन् १३२४ में इन्हें निजामुद्दीन औलिया की मृत्यु का समाचार मिला और ये तुरन्त वहां से चले आये। खुसरो के पास जो सम्पत्ति थी सब उन्होंने इस दुख में लुटा दी। जब ये निजामुद्दीन औलिया की कब्र के पास पहुंचे तो बेहोश होकर गिर पड़े। वहां इन्होंने एक दोहा भी पढ़ा, वह इस प्रकार था—

गोरी सोवै सेज पै मुख पर डारे केस।
चल खसरो घर आपने रैन भई चहं देस ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

औलिया इनके गुरु थे और उनकी मृत्यु से खुसरो को भारी दुख हुआ। ये अपने गुरु की कब्र के पास ही दफनाये गये। सन् १६०५ में ताहिर बेग नामक अमीर ने वहां पर एक मकबरा बनवा दिया। इनके ग्रंथों से यह ज्ञात होता है कि इनके तीन पुत्र और एक पुत्री थी। पुत्रों का नाम गयासउद्दीन अहमद, ऐनुद्दीन अहमद और यमीनुद्दीन मुबारक था। इनके विषय में कोई और वृत्तान्त नहीं मिलता। पर उनके गीत, पहेलियां आदि आज सैकड़ों वर्ष बाद भी हमारी जबान पर हैं। इनकी कविता की पुस्तकें ९९ हैं जिनमें से २२ ग्रंथ अब प्राप्त हैं, शेष का पता नहीं चलता। ये ग्रंथ इस प्रकार हैं--

मसनवी किरानुस्सादैन, मसनवी मतलउल अनवार, मसनवी शीरीं व खुसरों, मसनवी लैली व मजनू, सिकंदरनामा, मसनवी हश्त-बिहिश्त, मसनवी खिज़-नामः, मसनवी नुह सिपहर, मसनवी तुग़लकनामा, तारीखे अलाई, इंशाएखुसरो, एजाजे खुसरवी, अफ़जलुलफवायद, राहतुलमुर्जी, खालिकबारी, जवाहिरुलबह, मुकालः, किस्सा चहार दर्वेश, दीवान, तुहफतुस्सग्र, दीवान वस्तुलहायात, दीवान गर्रतुल्कमाल, दीवान बकीयः नकीयः।

खुसरो केवल कवि और लेखक ही नहीं वरन् एक अच्छे गायक भी थे। प्रसिद्ध गायक जससावंत और नायक गोपाल आदि जैसे प्रसिद्ध गवैये इन्हें गुरुवत् समझते थे। आज भी गांवों में झूले पर गाती हुई स्त्रियां खुसरो को दुहराती हैं--

जो पिय आवन कह गये अजहुं न आये स्वामी हो
ऐ जो पिया आवन कह गये
आवन कह गये आये न बारह मास
ऐ हो जो पिया आवन कह गये।

खुसरो ने बहुत सी नयी धुनें भी हिन्दी को दीं, पुराने छंदों को तोड़ कर नये छंदों का निर्माण किया। वे एक महान् कवि थे, महान् व्यक्ति थे। आगे हम उनकी कुछ पहेलियां दे रहे हैं। इन्हें सोचो और यदि समझ में न आये तो उत्तर देखो।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहेलियां

एक नार वह दांत दतीली
दुबली पतली छैल छबीली
जब वा तिरियहिं लागे भूख
सूखे हरे चबावे रूख
जो बताय बाही बलिहारी
खुसरो कहे उरे को आरी।
इधर को आवे उधर को जावे
हर-हर फेर काट वह खावे
ठहर रहे जिस दम वह नारी
खुसरो कहे उरे को आरी।
स्याम बरन औ दांत अनेक
लचकत जैसे नारी
दोनों हाथ से खुसरो खींचे
और कहे तू आरी।
(आरी)

पौन चलत वह देह बढ़ावे
जल पीवत वह जीव गंवावे
है वह प्यारी सुन्दर नार
नार नहीं पर है वह नार।
(आग)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फारसी बोली आईना
तुर्की ढूंढ़ी पाई ना
हिन्दी बोली आरसी आये
खुसरो कहे न कोई बताये ।

एक नार पिया को भानी
तन वाको सगरा ज्यों पानी
आब रखे पर पानी नाहिं
पिय को राखे हिर्दय मांहि
जब पी को वह मुख दिखलावे
आपहि सगरी पी हो जावे ।

हाथ में लीजे
देखा कीजे ।

झिलमिल कुवां रतन की क्यारी
बताओ तो बताओ नहिं दूंगी गारी ।
अरथ जो इसका बूझेगा
मुंह देखो तो सूझेगा ।
सामने आये, कर दे दो
मारा जाय न जख्मी हो ।
(आईना)

स्याम बरन की है एक नारी
माथे ऊपर लागे प्यारी
जो मानुस इस अरथ को खोले
कुत्ते की वह बोली बोले ।
(भौं)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घूम 'घाम के आई है
मेरे मन को भाई है
देखी है पर चाखी नहीं
अल्ला की कसम खाई है ।
(खाई)

एक नार जब बन कर आवे
मालिक अपने ऊपर बुलावे
है वह नारी सबके गौ की
खुसरो नाम लिये तो चौकी ।
(चौकी)

सावन भादों बहुत चलत है
माघ पूस में थोरी
अमीर खुसरो यों कहै
तू बूझ पहेली मोरी ।
अंदर है और बाहर बहे
जो देखे सो मोरी कहे ।
(मोरी)

एक मंदिर के सहस्र दर
हर दर में तिरिया का घर
बीच में वाके अमृत ताल
बूझ पहेली मेरे लाल ।
(मधुमक्खी का छत्ता)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीसों का सिर काट लिया
न मारा न खून किया।
(नाखून)

एक नार तरवर से उतरी
मां सों जनम न पायो
बाप को नाम जो वासे पूछो
आधो नाम बतायो
आधो नाम बतायो
खुसरो कौन देस की बोली
वाको नांव जो पूछो मैंने
अपने नाम न बोली।
(निबोली)

एक थाल मोती से भरा
सबके सिर पर औंधा धरा
चारों ओर थाली वह फिरे
मोती उससे एक न गिरे।
(आकाश)

आवे तो अंधेरी लावे
जावे तो सब सुख ले जावे
क्या जानूं वह कैसा है
जैसा देखो वैसा है।
(आंख)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रात समय एक सूहा आया
फूलों पातों सब को भाया
आग दिये वह होवे रूख
पानी दिये जाय वह सूख।
आग दिये फूले फले
सींचत जावे सूख
मैं तोहिं पूछी ए सखी
फूल के भीतर रूख।
(आतशबाजी का अनार)

धूपों से वह पैदा होवे
छांव देख मुरझाये
ए री सखी मैं तुझसे पूछं
हवा लगे मर जाये।
(पसीना)

खेत में उपजे सब कोई खाय
घर में होवे घर खा जाय।
(फूट)

एक गुनी ने यह गुन कीन्हा
हरियल पिंजरे में दे दीन्हा
देखो जादूगर का हाल
डाले हरा निकाले लाल।
(पान)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक नारी के हैं दो बालक
दोनों एकहि रंग
एक फिरे एक ठाढ़ा रहे
फिर भी दोनों संग ।
(चाकी के पाट)

आदि कटे से सबको पाले
मध्य कटे से सब को घाले
अंत कटे से सब को मीठा
सो खुसरो इन आंखिन दीठा ।
(काजल)

एक कहानी मैं कहूं
सुन ले मेरे पूत
बिना परों वह उड़ गया
बांध गले में सूत ।
(पतंग)

रोटी जली क्यों ?
घोड़ा अड़ा क्यों
पान सड़ा क्यों ?
(फेरा न था)

राजा प्यासा क्यों ?
गदहा उदासा क्यों ?
(लोटा न था)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खिचड़ी क्यों न पकाई ?
कबूतरी क्यों न उड़ाई ?
(छड़ी न थी)

ऐन मैन है सीप की सूरत
आंखों देखी कहती है
अन खावे ना पानी पीवे
देखे से वह जीती है
दौड़-दौड़ जमी पर दौड़े
आसमान पर उड़ती है
एक तमाशा हमने देखा
हाथ पांव नहिं रखती है।
(आंख)

धूम धुमेला लंहगा पहिने
एक पांव से रहे खड़ी
आठ हाथ हैं उस नारी के
सूरत उसकी लगे परी
सब कोई उसकी चाह करे हैं
मुसलमान हिन्दू छत्री
खुसरो ने यह कही पहेली
दिल में अपने सोच जरी।
(छतरी)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नारी से तू नर भई
स्याम बरन भइ सोय
गली-गली कूकत फिरे
कोइ लो कोइ लो लोय ।

(कोयला)

गोल मटोल और छोटा मोटा
हरदम वह तो जमी पर लोटा
खुसरो कहे नहीं है झूठा
जो ना बूझे अकिल का खोटा ।
खड़ा भी लोटा पड़ा भी लोटा
है बैठा और कहैं हैं लोटा
खुसरो कहै समझ का टोटा ।

(लोटा)

बात की बात ठिठोली की ठिठोली
मरद की गांठ औरत ने खोली ।

(ताला)

जल-जल चलता बसता गांव
बस्ती में ना वा का ठांव
खुसरो कह दिया वाका नांव ।
अरथ करो नहिं छोड़ो गांव ।

(नाव)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाम-मांस वाके नहिं एक
हाड़-मांस में वाके छेद
मोहि अचम्भो आवत ऐसे
वा में जीउ बसत हैं कैसे।
(पिंजरा)

एक पुरुष बहुत गुन भरा
लेटा जागै सोवे खड़ा
उल्टा होकर डाले बेल
यह देखो करतार का खेल।
(चरखा)

एक नार तरवर से उतरी
सर पर वाके पांव
ऐसी नार कुनार को
मैंना देखन जांव।
(मैना)

एक अचम्भा देख रे चल
सूखी लकड़ी लागे फल
जो कोई इस फल को खावे
पेड़ छोड़ कहिं और न जावे।
(बर्छी)

अचरज बंगला एक बनाया
ऊपर नीव तले घर छाया
बांस न बल्ली बंधन घने
कह खुसरो घर कैसे बने।
(बया का घोसला)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri